http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2025) वर्ष 5, अंक 10, 72-77

Article ID: 666

प्रचार-प्रसार में कृषि विज्ञान केंद्र की भूमिका

रूपेंद्र कुमार[1]
मम्ता कम्बोज [2]
नवीश कुमार कम्बोज[3]

[1]कृषि विज्ञान केन्द्र, रोहतक
[2]कपास अनुभाग
आनुवंशिकी और पादप प्रजनन
[3]सहायक वैज्ञानिक (सस्य विज्ञान)
चौधरी चरण सिंह हरियाणा
कृषि विश्वविद्यालय , हिसार

*अनुरूपी लेखक

रूपेंद्र कुमार*

परिचय

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ कृषि करोड़ों लोगों की आजीविका का प्रमुख आधार है। देश की खाद्य सुरक्षा, ग्रामीण अर्थव्यवस्था और सामाजिक विकास में किसानों की महत्वपूर्ण भूमिका है। आज कृषि क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन, मिट्टी की घटती उर्वरता, सिंचाई के लिए पानी की कमी, कीट एवं रोगों का प्रकोप, खेती की बढ़ती लागत और कृषि उत्पादों के उचित मूल्य जैसी अनेक चुनौतियाँ सामने आ रही हैं। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए किसानों तक नवीन कृषि तकनीकों, वैज्ञानिक जानकारी और उपयोगी कृषि पद्धतियों को पहुँचाना अत्यंत आवश्यक है। कृषि अनुसंधान संस्थानों और किसानों के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कृषि विज्ञान केंद्र (Krishi Vigyan Kendra—KVK) कार्य करते हैं। कृषि विज्ञान केंद्रों का प्रमुख उद्देश्य किसानों, ग्रामीण युवाओं, महिला किसानों और कृषि से जुड़े अन्य लोगों को उनकी स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार व्यावहारिक कृषि ज्ञान तथा तकनीकी प्रशिक्षण उपलब्ध कराना है। कृषि विज्ञान केंद्र केवल किसानों को जानकारी देने तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे नई तकनीकों का खेतों में परीक्षण, प्रदर्शन, प्रशिक्षण, सलाह और कृषि समस्याओं के समाधान में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। इनके माध्यम से वैज्ञानिक कृषि तकनीकों को किसानों की वास्तविक परिस्थितियों के अनुरूप अपनाने में सहायता मिलती है। कृषि विज्ञान केंद्र वैज्ञानिक ज्ञान और किसान के अनुभव के बीच एक सेतु है, जो कृषि अनुसंधान को खेत तक और किसानों की समस्याओं को वैज्ञानिकों तक पहुँचाने का कार्य करता है।

1. कृषि विज्ञान केंद्र की स्थापना और उद्देश्य

कृषि विज्ञान केंद्रों की स्थापना का मुख्य उद्देश्य कृषि एवं संबंधित क्षेत्रों में व्यावसायिक दक्षता विकसित करना और किसानों तक वैज्ञानिक तकनीकों को पहुँचाना है। भारत में कृषि विज्ञान केंद्रों की स्थापना का विचार भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) के अंतर्गत विकसित हुआ। पहला कृषि विज्ञान केंद्र वर्ष 1974 में पुडुचेरी में स्थापित किया गया था। आज कृषि विज्ञान केंद्र देश के विभिन्न जिलों में किसानों की आवश्यकताओं के अनुसार कृषि, बागवानी, पशुपालन, मत्स्य पालन, गृह विज्ञान, कृषि अभियांत्रिकी तथा अन्य संबंधित क्षेत्रों में प्रशिक्षण और तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

कृषि विज्ञान केंद्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- किसानों और ग्रामीण युवाओं को कृषि एवं संबंधित व्यवसायों का व्यावहारिक प्रशिक्षण देना।
- नई कृषि तकनीकों का खेतों पर परीक्षण करके उनकी उपयोगिता का आकलन करना।

- उन्नत कृषि तकनीकों का प्रदर्शन करना, ताकि किसान उनके लाभ और उपयोग की विधि समझ सकें।
- किसानों की स्थानीय समस्याओं की पहचान करके उपयुक्त समाधान उपलब्ध कराना।
- प्राकृतिक खेती, मृदा स्वास्थ्य, जल संरक्षण और टिकाऊ कृषि पद्धतियों के प्रति जागरूकता बढ़ाना।
- महिला किसानों और ग्रामीण युवाओं को कृषि आधारित रोजगार तथा उद्यमिता के अवसरों से जोड़ना।
- कृषि विभाग, कृषि विश्वविद्यालयों, अनुसंधान संस्थानों और किसानों के बीच समन्वय स्थापित करना।

इन उद्देश्यों के माध्यम से कृषि विज्ञान केंद्र कृषि विकास के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में ज्ञान, कौशल और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देते हैं।

2. कृषि प्रचार-प्रसार में कृषि विज्ञान केंद्र की भूमिका

कृषि प्रचार-प्रसार का अर्थ है वैज्ञानिक कृषि जानकारी, नई तकनीकों और उपयोगी अनुभवों को किसानों तक पहुँचाना तथा उन्हें अपनाने के लिए आवश्यक मार्गदर्शन देना। किसान तभी किसी नई तकनीक को सफलतापूर्वक अपना सकता है, जब उसे उसके लाभ, उपयोग की विधि, लागत, संभावित जोखिम और स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूलता की जानकारी हो। कृषि विज्ञान केंद्र इस प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

2.1 किसानों को प्रशिक्षण देना

कृषि विज्ञान केंद्र किसानों को उनकी आवश्यकताओं के अनुसार विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण देते हैं। इनमें उन्नत बीज उत्पादन, फसल प्रबंधन, पौध संरक्षण, जैविक खाद तैयार करना, प्राकृतिक खेती, पशुपालन, मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन, सब्जी उत्पादन और कृषि यंत्रों का उपयोग जैसे विषय शामिल हो सकते हैं।प्रशिक्षण में केवल सैद्धांतिक जानकारी ही नहीं दी जाती, बल्कि व्यावहारिक अभ्यास पर भी ध्यान दिया जाता है। उदाहरण के लिए, प्राकृतिक खेती पर प्रशिक्षण के दौरान किसानों को जीवामृत, बीजामृत, कम्पोस्ट और अन्य उपयुक्त कृषि विधियों की तैयारी एवं उपयोग के बारे में जानकारी दी जा सकती है। इससे किसान नई तकनीकों को समझकर अपने खेतों में अपनाने की क्षमता विकसित करते हैं।

2.2 खेतों पर प्रदर्शन आयोजित करना

किसी नई तकनीक की उपयोगिता को समझने के लिए उसका वास्तविक खेत में प्रदर्शन बहुत प्रभावी माध्यम है। कृषि विज्ञान केंद्र किसानों के खेतों पर उन्नत किस्मों, संतुलित पोषण, जल प्रबंधन, कीट प्रबंधन तथा अन्य तकनीकों के प्रदर्शन आयोजित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, गेहूँ की खेती में उचित बीज दर, समय पर बुवाई, खरपतवार प्रबंधन और सिंचाई की वैज्ञानिक विधियों का प्रदर्शन किसानों को बेहतर निर्णय लेने में मदद करता है। इसी प्रकार प्राकृतिक खेती में मल्चिंग, फसल विविधीकरण, हरी खाद और जैविक संसाधनों के उचित उपयोग का प्रदर्शन किसानों को इन तकनीकों की व्यावहारिक उपयोगिता समझने में सहायता करता है। जब किसान अपने आसपास के खेत में किसी तकनीक के परिणाम देखते हैं, तो उनका विश्वास बढ़ता है और वे उसके बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रेरित होते हैं।

2.3 खेतों पर परीक्षण और तकनीक का स्थानीय अनुकूलन

किसी क्षेत्र के लिए विकसित तकनीक हर जगह समान परिणाम नहीं देती। मिट्टी, जलवायु, सिंचाई की सुविधा, फसल प्रणाली और किसानों की आर्थिक स्थिति के अनुसार तकनीक की उपयोगिता बदल सकती है। कृषि विज्ञान केंद्र किसानों के खेतों और स्थानीय परिस्थितियों में तकनीकों का परीक्षण करते हैं। इन परीक्षणों से यह समझने में मदद मिलती है कि कौन-सी किस्म, कृषि पद्धति या उत्पादन तकनीक स्थानीय परिस्थितियों में अधिक उपयुक्त हो सकती है।

परीक्षणों से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर किसानों को तकनीक अपनाने के संबंध में मार्गदर्शन दिया जाता है। इस प्रकार अनुसंधान और किसानों की वास्तविक जरूरतों के बीच संबंध मजबूत होता है।

3. प्राकृतिक खेती के प्रचार-प्रसार में कृषि विज्ञान केंद्र का योगदान

वर्तमान समय में प्राकृतिक खेती, मृदा स्वास्थ्य, जल संरक्षण और कृषि लागत को कम करने जैसे विषयों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। प्राकृतिक खेती का उद्देश्य स्थानीय संसाधनों का उचित उपयोग करना, मिट्टी की जैविक गतिविधियों को प्रोत्साहित करना और कृषि को अधिक टिकाऊ बनाना है। कृषि विज्ञान केंद्र किसानों को प्राकृतिक खेती की अवधारणा, उसके सिद्धांतों, संभावित लाभों और सीमाओं के बारे में जानकारी देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

3.1 प्राकृतिक खेती पर प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केंद्र किसानों को जीवामृत, घनजीवामृत, बीजामृत, मल्चिंग, फसल चक्र, मिश्रित खेती, हरी खाद और फसल अवशेष प्रबंधन जैसी विधियों के बारे में प्रशिक्षण दे सकते हैं। प्रशिक्षण के दौरान किसानों को यह समझाना आवश्यक है कि प्रत्येक विधि का उपयोग फसल और स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार किया जाना चाहिए। केवल किसी मिश्रण का उपयोग करने से अच्छी उपज या अधिक लाभ की गारंटी नहीं होती। मिट्टी की जाँच, संतुलित पोषण, सिंचाई प्रबंधन और रोगों की सही पहचान भी खेती की सफलता के लिए जरूरी हैं।

3.2 जैविक संसाधनों का उपयोग सिखाना

कृषि विज्ञान केंद्र किसानों को खेत में उपलब्ध फसल अवशेषों, गोबर, कम्पोस्ट और अन्य उपयुक्त जैविक संसाधनों के बेहतर उपयोग के बारे में मार्गदर्शन दे सकते हैं। इससे किसान कृषि अपशिष्ट को उपयोगी संसाधन में बदलने की संभावनाओं को समझते हैं। उचित कम्पोस्टिंग और जैविक पदार्थों के उपयोग से मिट्टी में कार्बनिक पदार्थ बढ़ाने में सहायता मिल सकती है।

साथ ही, किसानों को यह जानकारी देना भी जरूरी है कि प्राकृतिक और जैविक मिश्रणों की गुणवत्ता उनकी तैयारी, सामग्री और उपयोग की विधि पर निर्भर करती है।

3.3 किसानों को लागत और लाभ का मूल्यांकन सिखाना

प्राकृतिक खेती अपनाने से पहले किसानों को अपनी वर्तमान उत्पादन लागत और संभावित बदलावों का आकलन करना चाहिए। कृषि विज्ञान केंद्र किसानों को बीज, खाद, श्रम, सिंचाई, कीट प्रबंधन, उत्पादन और बाजार मूल्य का रिकॉर्ड रखने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। इससे किसान यह समझ सकते हैं कि उनके खेत में कौन-सी विधि आर्थिक रूप से उपयुक्त है। किसी तकनीक को अपनाने का निर्णय केवल प्रचार के आधार पर नहीं, बल्कि खेत में उसके परिणामों और लागत-लाभ के विश्लेषण के आधार पर होना चाहिए।

4. किसानों की समस्याओं का समाधान

कृषि विज्ञान केंद्रों की एक महत्वपूर्ण भूमिका किसानों की स्थानीय समस्याओं की पहचान और समाधान में सहायता करना है। किसानों को अक्सर फसल में कीट एवं रोग, पौधों का पीला पड़ना, अंकुरण की समस्या, मिट्टी की लवणता, सिंचाई की कमी और उत्पादन में गिरावट जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिक और विशेषज्ञ इन समस्याओं की जानकारी लेकर उचित तकनीकी सलाह दे सकते हैं। आवश्यकता पड़ने पर मिट्टी या पौधों के नमूनों की जाँच के लिए संबंधित प्रयोगशालाओं की सहायता भी ली जा सकती है।

किसानों की समस्याओं के समाधान के प्रमुख माध्यम

- खेत का निरीक्षण और समस्या की प्रारंभिक पहचान।
- मिट्टी एवं पानी की जाँच संबंधी मार्गदर्शन।
- कीट और रोग की पहचान तथा उचित प्रबंधन की सलाह।
- फसल की किस्म और बुवाई के समय के संबंध में सुझाव।
- जल संरक्षण तथा सिंचाई प्रबंधन की तकनीकों की जानकारी।
- कृषि यंत्रों और नई उत्पादन विधियों का प्रदर्शन।
- आवश्यकता पड़ने पर संबंधित विशेषज्ञों या विभागों से संपर्क।

समस्या की सही पहचान के बाद ही उपचार या प्रबंधन की सलाह देना महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए, पत्तियों का पीला होना हमेशा किसी एक पोषक तत्व की कमी का संकेत नहीं होता; इसके पीछे जलभराव, जड़ों की समस्या, रोग या अन्य कारण भी हो सकते हैं। इसलिए कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा दी गई वैज्ञानिक सलाह किसानों को अनावश्यक खर्च और गलत उपचार से बचाने में मदद कर सकती है।

5. आधुनिक संचार माध्यमों द्वारा कृषि जानकारी का प्रचार

आज कृषि प्रचार-प्रसार के लिए पारंपरिक तरीकों के साथ डिजिटल संचार माध्यमों का महत्व भी बढ़ रहा है। कृषि विज्ञान केंद्र किसानों तक समय पर जानकारी पहुँचाने के लिए मोबाइल फोन, संदेश सेवाओं, सोशल मीडिया, ऑनलाइन बैठकों और अन्य उपलब्ध माध्यमों का उपयोग कर सकते हैं।

5.1 किसान गोष्ठियाँ और खेत दिवस

किसान गोष्ठियों में किसान, वैज्ञानिक, कृषि अधिकारी और अन्य विशेषज्ञ एक साथ बैठकर कृषि समस्याओं और उनके समाधान पर चर्चा करते हैं। खेत दिवस के माध्यम से किसान तकनीकों को प्रत्यक्ष रूप से देख सकते हैं और अपने प्रश्न पूछ सकते हैं।इन कार्यक्रमों में स्थानीय अनुभव साझा करने से किसानों के बीच सीखने की प्रक्रिया मजबूत होती है।

5.2 मोबाइल संदेश और डिजिटल माध्यम

मोबाइल संदेशों और डिजिटल समूहों के माध्यम से बुवाई, सिंचाई, मौसम, कीट प्रबंधन और फसल कटाई से संबंधित जानकारी किसानों तक पहुँचाई जा सकती है। डिजिटल माध्यम विशेष रूप से तब उपयोगी होते हैं, जब किसानों को कम समय में किसी कृषि समस्या से संबंधित सलाह चाहिए। हालांकि, डिजिटल जानकारी को स्थानीय परिस्थितियों और वैज्ञानिक सलाह के अनुरूप समझना आवश्यक है।

5.3 किसान मेलों और प्रदर्शनियों का आयोजन

कृषि विज्ञान केंद्र किसानों को नई तकनीकों, उन्नत किस्मों, कृषि यंत्रों, प्रसंस्करण उपकरणों और कृषि आधारित उद्यमों से परिचित कराने के लिए किसान मेलों तथा प्रदर्शनियों में भाग ले सकते हैं। इन आयोजनों में किसान विभिन्न तकनीकों की तुलना कर सकते हैं और विशेषज्ञों से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

6. महिला किसानों और ग्रामीण युवाओं का सशक्तीकरण

कृषि क्षेत्र में महिलाओं का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। बीज चयन, बुवाई, निराई-गुड़ाई, कटाई, पशुपालन, खाद तैयार करने और कृषि उत्पादों के प्रसंस्करण में महिलाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसके बावजूद कई बार उन्हें प्रशिक्षण और तकनीकी जानकारी तक पर्याप्त पहुँच नहीं मिल पाती। कृषि विज्ञान केंद्र महिलाओं की आवश्यकताओं के अनुसार प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर सकते हैं। इनमें पोषण वाटिका, मशरूम उत्पादन, खाद्य प्रसंस्करण, दुग्ध उत्पादन, पशुपालन, स्वयं सहायता समूहों का विकास और कृषि आधारित उद्यमिता जैसे विषय शामिल हो

सकते हैं। इसी प्रकार ग्रामीण युवाओं को कृषि यंत्रीकरण, ड्रोन तकनीक, नर्सरी प्रबंधन, मधुमक्खी पालन, मशरूम उत्पादन, कृषि उत्पादों की पैकिंग और विपणन जैसे क्षेत्रों में कौशल विकसित करने के अवसर दिए जा सकते हैं। ऐसे प्रशिक्षण ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार की संभावनाएँ बढ़ाने और कृषि को एक आधुनिक व्यवसाय के रूप में विकसित करने में योगदान दे सकते हैं।

7. जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधन संरक्षण में भूमिका

जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान में वृद्धि, वर्षा के अनियमित वितरण, सूखे और अत्यधिक वर्षा जैसी घटनाओं का कृषि पर प्रभाव पड़ सकता है। इन परिस्थितियों में किसानों को ऐसी तकनीकों की आवश्यकता है, जो स्थानीय जोखिमों को कम करने में सहायता करें। कृषि विज्ञान केंद्र किसानों को जलवायु अनुकूल कृषि पद्धतियों के बारे में जानकारी दे सकते हैं। इनमें उपयुक्त फसल किस्मों का चयन, फसल विविधीकरण, जल संरक्षण, सूक्ष्म सिंचाई, मिट्टी में जैविक पदार्थों का प्रबंधन और मौसम आधारित कृषि सलाह शामिल हो सकती है। जल संरक्षण के लिए वर्षा जल संचयन, खेत में उचित जल निकास, मल्चिंग और सिंचाई के बेहतर प्रबंधन का प्रशिक्षण भी उपयोगी है। इसके अतिरिक्त, किसानों को मौसम पूर्वानुमान के आधार पर बुवाई, सिंचाई, छिड़काव और कटाई की योजना बनाने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। इन प्रयासों से प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और कृषि उत्पादन की स्थिरता में सहायता मिल सकती है।

8. कृषि विज्ञान केंद्र और बाजार से जुड़ाव

किसानों की आय में सुधार के लिए केवल उत्पादन बढ़ाना पर्याप्त नहीं है। उपज की गुणवत्ता, प्रसंस्करण, भंडारण, बाजार की जानकारी और उचित मूल्य प्राप्त करना भी महत्वपूर्ण है। कृषि विज्ञान केंद्र किसानों को कटाई के बाद प्रबंधन, उपज की सफाई, छँटाई, ग्रेडिंग, भंडारण तथा मूल्य संवर्धन के बारे में जानकारी दे सकते हैं। किसानों को किसान उत्पादक संगठनों (FPO), सहकारी समितियों, स्थानीय बाजारों और उपयुक्त डिजिटल विपणन माध्यमों से जुड़ने के अवसरों के बारे में भी बताया जा सकता है। उदाहरण के लिए, किसान यदि गेहूँ, बाजरा, दालें या सरसों पैदा करते हैं, तो उचित सफाई, गुणवत्ता के अनुसार छँटाई और सुरक्षित पैकेजिंग से उनकी उपज को बाजार के लिए बेहतर तरीके से तैयार किया जा सकता है। कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा दी गई तकनीकी जानकारी के साथ बाजार की वास्तविक माँग, परिवहन लागत और बिक्री मूल्य का आकलन करना भी जरूरी है। इससे किसानों को अधिक व्यावहारिक और आर्थिक रूप से उचित निर्णय लेने में सहायता मिल सकती है।

9. कृषि विज्ञान केंद्रों के प्रचार-प्रसार कार्य में चुनौतियाँ

कृषि विज्ञान केंद्रों की भूमिका महत्वपूर्ण है, लेकिन किसानों तक प्रभावी ढंग से पहुँचने में कुछ चुनौतियाँ भी सामने आती हैं।

1. पहली चुनौती है किसानों की संख्या और उपलब्ध विशेषज्ञों के बीच संतुलन। कई क्षेत्रों में बड़ी संख्या में किसानों तक नियमित प्रशिक्षण और व्यक्तिगत मार्गदर्शन पहुँचाना कठिन हो सकता है।
2. दूसरी चुनौती है डिजिटल संसाधनों और तकनीकी जानकारी तक असमान पहुँच। सभी किसानों के पास स्मार्टफोन, इंटरनेट या डिजिटल जानकारी का पर्याप्त अनुभव नहीं होता।
3. तीसरी चुनौती है नई तकनीक अपनाने की आर्थिक क्षमता। कुछ तकनीकों के लिए अतिरिक्त निवेश, उपकरण या श्रम की आवश्यकता होती है, जिसे छोटे किसान तुरंत वहन नहीं कर पाते।
4. चौथी चुनौती है वैज्ञानिक जानकारी और भ्रामक दावों के बीच अंतर करना। कृषि संबंधी गलत जानकारी के कारण किसानों को आर्थिक नुकसान हो सकता है।

इन चुनौतियों को कम करने के लिए निम्नलिखित कदम उपयोगी हो सकते हैं:

- गाँव स्तर पर नियमित प्रशिक्षण और प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित करना।
- स्थानीय भाषा में सरल और व्यावहारिक कृषि सामग्री उपलब्ध कराना।
- किसानों की वास्तविक समस्याओं के आधार पर प्रशिक्षण विषय निर्धारित करना।
- कृषि विभाग, पंचायतों, स्वयं सहायता समूहों और किसान संगठनों के साथ समन्वय बढ़ाना।
- प्रशिक्षण के बाद किसानों से प्रतिक्रिया लेकर तकनीकी मार्गदर्शन जारी रखना।
- सफल और असफल दोनों प्रकार के खेत परीक्षणों से मिले अनुभवों को साझा करना।

10. कृषि विज्ञान केंद्रों के कार्य को अधिक प्रभावी कैसे बनाएँ?

कृषि विज्ञान केंद्रों के प्रचार-प्रसार कार्य को प्रभावी बनाने के लिए किसानों की भागीदारी को केंद्र में रखना आवश्यक है। प्रशिक्षण कार्यक्रम केवल जानकारी देने तक सीमित न हों, बल्कि किसानों को प्रश्न पूछने, प्रयोग करने और अपने अनुभव साझा करने का अवसर भी दें। प्रत्येक क्षेत्र की मिट्टी, जलवायु, फसल प्रणाली और सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों के अनुसार कार्यक्रमों की योजना बनाई जानी चाहिए।

इसके लिए कुछ प्रमुख उपाय अपनाए जा सकते हैं:

1. **ग्राम स्तर पर कृषि समस्याओं का सर्वेक्षण:** इससे किसानों की वास्तविक जरूरतों की पहचान की जा सकती है।
2. **प्रदर्शन आधारित प्रशिक्षण:** किसान खेत में तकनीक देखकर और उसका अभ्यास करके अधिक प्रभावी ढंग से सीख सकते हैं।
3. **स्थानीय सफल किसानों की भागीदारी:** उनके अनुभव अन्य किसानों के लिए प्रेरणादायक हो सकते हैं।
4. **प्रशिक्षण के बाद अनुवर्ती मार्गदर्शन:** तकनीक अपनाने के दौरान आने वाली समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।
5. **महिला किसानों और युवाओं की भागीदारी:** इससे कृषि ज्ञान का व्यापक प्रसार और नए उद्यमों का विकास संभव हो सकता है।
6. **परिणामों का मूल्यांकन:** उपज, लागत, संसाधन उपयोग और किसानों की प्रतिक्रिया के आधार पर कार्यक्रमों की उपयोगिता समझी जा सकती है।

इस प्रकार कृषि विज्ञान केंद्रों का कार्य अधिक व्यावहारिक, सहभागी और परिणामोन्मुख बनाया जा सकता है।